सुनोगी मेरी कहानी

जुही

मेरा नाम चंपा है। बंगाल के सबसे गरीब और पिछड़े इलाके के एक छोटे से गांव मेघापुर में मेरा जन्म हुआ। मेरा परिवार बहुत ही गरीब है। पिता दूर-दूर के इलाकों में मजूरी करने जाते। जो भी कमाते उससे घर का खर्चा होता। फिर भी मुझे कोई ऐसा दिन याद नहीं है जब मैंने भरपेट चावल खाया हो। घर में मेरे अलावा मेरे छः छोटे भाई-बहन भी थे।

मेरा बचपन

मुझे अभी भी याद है। कई बार जब घर में खाना नहीं होता था तो मैं अपने छोटे भाई-बहनों के साथ तीस कोस दूर देवी मंदिर जाती। वहां पर भीख मांगते। कई बार मंदिर का पुजारी हम पर दया करके थोड़ा कुछ खाने को देता था।

रोज शाम को मेरे पिताजी पास के तालाब से मछली पकड़ने जाते। रात को मछली जल्दी फंसती हैं। दो-तीन बड़ी मछली मिल जातीं तो उन्हें बेच कर बदले में कुछ और चावल खरीद लेते। एक-दो छोटी मछली मैं छुपा लेती। भूनकर खाने के लिए। मुझे बहुत अच्छी लगती है न।

मेरी मां हमारे साथ नहीं रहती थी। कभी-कभी आती थी मिलने। शहर में फैक्टरी में काम करती थी। याद है मां बहुत सुंदर थी। अच्छे कपड़े पहनती। खुशबू लगाती। फूल लगाती। जब भी घर आती, हम सबके लिए कपड़े-मिठाई लाती। हम मां को देखकर बहुत खुश होते। पर न जाने क्यों पिताजी जब भी मां को देखते उनकी आंखों से आंसू बहते। दोनों कुछ बात करते। फिर मुझे सीने से लगाकर मां खूब रोती।

मैं काम करना चाहती थी

मैं तेरह साल की हो गई। पास-पड़ौस के बच्चे शहर में काम करने जाते। मैं भी काम करना चाहती थी। पिताजी से कहा कि मैं भी और बच्चों की तरह शहर जाऊंगी। फिर घर पैसे भेजूंगी। फिर हम आराम से रहेंगे। पर मां-पिताजी दोनों नहीं मानते। पर मैं बहुत जिद्दी थी। एक दिन मां मुझे अपने साथ शहर ले गई। शहर में मैंने देखा, मां जिस जगह रहती है वहां मेरी तरह और भी लड़कियां थीं। तेरह-चौदह साल की। सुबह शाम कुछ आदमी आते और दो-चार बच्चियां उनके साथ चली जातीं। एक-दो दिन बाद वापस आतीं।

दूसरे दिन एक आदमी हमारे घर आया। मैं और मां चुपचाप उसके साथ चले गये। वह हमें एक दफ्तर में ले गया। दफ्तर के मालिक ने कहा कि वह मुझे काम दिलाएगा। मुझे एक घर में बर्तन-सफाई करनी है। 20 रुपये मिलेंगे। खाना-कपड़ा भी। मेरी मां राजी हो गई। पर मैं मां की तरह फैक्टरी में काम करना चाहती थी। पर मां

नहीं मानती थी। कहती थी उसके लिए मैं बहुत छोटी हूं।

काम का बोझ

मैंने काम करना शुरू कर दिया। मेरे नए मालिक अच्छे थे। मुझे खाने को भरपेट मिलता था। चावल भी और मछली भी। पर मुझे काम बहुत करना पड़ता था। सुबह छः बजे से रात को देर तक। मुझे घर की बहुत याद आती। और मैं रात को रोती रहती। सोचती, अगर हम गरीब नहीं होते तो कितना अच्छा होता।

मैं अभी भी फैक्टरी में काम करना चाहती थी। मां की तरह बहुत पैसा कमाना चाहती थी। इसलिए मैं अपना काम छोड़ने का बहाना ढूंढती रहती थी। मालिक के घर में एक नौकर था नन्दू। नन्दू की एक बहन थी रोज़ी जो एक बड़ी फैक्टरी के होटल में काम करती थी। वह भी मां की तरह अच्छे-अच्छे कपड़े पहनती। जेवर पहनती।

नन्दू ने मुझे अपनी बहन से मिलवाया। रोज़ी ने कहा, अगर मैं उसकी बात मानूंगी तो वह मुझे अपने होटल में काम दिलाएगी। वहां खूब पैसा मिलेगा। मेरे परिवार की गरीबी दूर हो जायेगी।

सपना टूट गया

मुझे होटल में काम मिल गया। मुझे खूब पैसे मिलते। मैं घर पैसे भेजती। मेरे भाई बहन पढ़ने लगे। एक महीने सब ठीक रहा। फिर एक दिन रोज़ी ने एक कमरे में मुझे नाश्ता देने भेजा। कमरे में एक आदमी ने मुझे धर-दबोचा। मैं चीखी-चिल्लाई पर वह नहीं माना। उसने मेरे साथ बलात्कार किया।

अब मुझे पहले से भी ज्यादा पैसे मिलते। न जाने कितने आदमियों ने मेरे साथ बलात्कार किया। मैं भागना चाहती थी। पर होटल के गार्ड मुझे बाहर नहीं निकलने देते थे। मुझे छूत की बीमारी हो गई थी। धीरे-धीरे मालूम हुआ फैक्टरी की आड़ में यही होता है। गरीब लड़कियों की मजबूरी का फायदा उठाया जाता है। मेरे साथ काम करने वाली लड़कियां भी दुखी थीं। हम सब यहां से भागना चाहते थे।

एक दिन हम चार लड़कियां रात के सन्नाटे में खिड़की खोलकर भाग निकले। पुलिस थाने पहुंचे। दूसरे दिन पुलिस ने होटल में छापा मारा। पर तब तक रातों-रात वह लोग वहां से भाग गये थे। मैं वापस घर आ गई। अपना इलाज कराया।

अब मैं काम करती हूं। घर में नौकरानी का। पैसे कम हैं। पर अब ज्यादा खुश हूं। अब समझ पाई हूं मेरी मां मुझे फैक्टरी में काम क्यों नहीं करने देती थी। वह किस मजबूरी से हमें पाल रही थी।

कांटों से दामन बचाएं

मेरी आपबीती सुनकर आपको क्या लगा? क्या आप दुखी हुए, शर्मिन्दा हुए या नाराज। जो भी हो मैं अपनी जिंदगी के जरिए, अपनी तकलीफ़ आपके साथ बांट रही हूं। मेरी जिंदगी से सबक लेकर बहुत सी लड़कियों का जीवन बर्बाद होने से बच जाएगा, यह मेरी उम्मीद है।

''बहनों, मैं चाहती हूं आप जानें मैंने क्या भोगा है। इससे सबक लेकर आप समय से पहले न मुरझाएं। यह जानने से पहले कि जीवन में फूल ही फूल नहीं हैं आप कांटों से दामन बचाना सीख लें।''

—एक सच्ची घटना
पर आधारित